MARKING SCHEME

Q.No.		Max.
1	वह वक्र जिस पर प्रत्येक विभिन्न बिन्दु दो वस्तुओं के ऐसे बण्डलों को दर्शाते हैं जिनसे उपभोक्ता को समान संतुष्टी मिलती है।	1
2	(ब) पूरक	1
3	(ब) नीचे की ओर ढलवा अवतल	1
4		

वस्तु X (इकाई)	वस्तु Y (इकाई)	सीमान्त रूपांतरण दर
0	30	
1	27	3Y : 1X
2	21	6Y : 1X
3	12	9Y : 1X
4	0	12Y : 1X

1½

क्योंकि सीमान्त रूपांतरण दर बढ़ रही है इसलिये उत्पादन संभावना वक्र नीचे की ओर ढलवां अवतल होगी। 1½

5. 'भारत में बनाइए' की अपील विदेशी उत्पादकों को भारत में उत्पादन करने का निमंत्रण है। इससे संसाधन बढ़ेंगे जिससे देश की उत्पादन क्षमता बढ़ेगी। परिणामस्वरूप उत्पादन संभावना वक्र ऊपर की ओर खिसक जाएगी। (रेखाचित्र आवश्यक नहीं है) 3

(अथवा)

बेरोजगारी कम करने का देश की उत्पादन क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं होता क्योंकि उत्पादन क्षमता पूर्ण रोजगार की मान्यता पर निर्धारित की जाती है
बेरोजगारी यह दर्शाती है कि देश में उत्पादन क्षमता से कम पर उत्पादन हो रहा है। बेरोजगारी कम करने से उत्पादन क्षमता पर काम करने में सहायता मिलती है। 3
(रेखाचित्र आवश्यक नहीं है)

6. सामान्य वस्तु की कीमत और माँग में विपरीत सम्बन्ध होने के कारण माँग की कीमत लोच के माप में ऋणात्मक चिन्ह होता है जबकि पूर्ति की कीमत लोच के माप में धनात्मक चिन्ह होता है क्योंकि वस्तु की कीमत और पूर्ति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। 3

7. इस विशेषता के कारण क्रेता/विभिन्न फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं में भेद नहीं करते हैं। परिणामस्वरूप वे सभी फर्मों द्वारा उत्पादित उत्पाद की एक ही कीमत देने को तैयार होंगे। इससे बाजार में उत्पाद की एक ही कीमत प्रचलित होगी। 3

उद्योग की

8. जब सरकार किसी वस्तु की न्यूनतम कीमत निर्धारित करती है तो न्यूनतम कीमत निर्धारण करते हैं जैसा कि रेखाचित्र में कीमत OP_1 है।

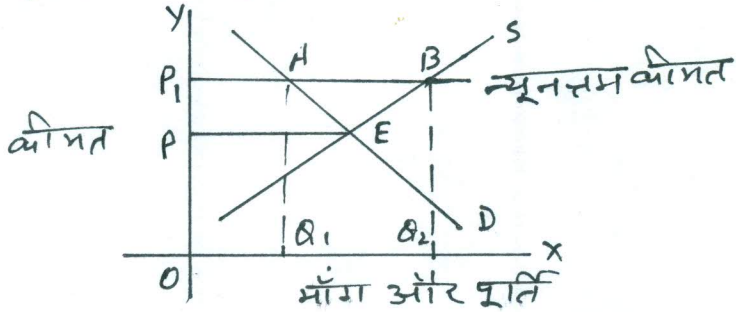

1

इस कीमत पर उत्पादक P_1B (या OQ_2) मात्रा सप्लाई करने को तैयार जबकि उपभोक्ताओं की माँग केवल P_1A (या OQ_1) है। अतः AB (या Q_1Q_2) मात्रा पूर्ति आधिक्य है। इस स्थिति में उत्पादक न्यूनतम कीमत से कम पर बेचने की गैरकानूनी कोशिश कर सकते हैं। 2

(न्यूनतम मजदूरी दर पर आधारित उत्तर भी सही है।)

केवल दृष्टीहीन परिक्षार्थियों के लिए:

जब सरकार किसी वस्तु की कीमत पर नीची सीमा लगाती है तो इसे न्यूनतम कीमत कहते हैं। 1

क्योंकि यह कीमत संतुलन कीमत से अधिक है, इस कीमत पर क्रेता जितनी मात्रा खरीदना चाहते हैं, उत्पादक उससे अधिक मात्रा सप्लाई करना चाहते हैं। इससे पूर्ति आधिक्य की स्थिति उत्पन्न होती है। इस स्थिति में उत्पादक गैरकानूनी तरीकों से कम कीमत पर वस्तु बेच सकते हैं। 2

9

कीमत	व्यय	माँग
10	1000	100
8	800	100

1½

$$\text{माँग की कीमत लोच} = \frac{\text{कीमत}}{\text{माँग}} \times \frac{\Delta \text{माँग}}{\Delta \text{कीमत}}$$ 1

$$= \frac{10}{100} \times \frac{0}{-2}$$ .1

$$= 0$$ ½

(केवल अन्तिम उत्तर देने पर कोई अंक न दें।)

10. (अ) जैसे जैसे अधिकाधिक उत्पादन किया जाता है औसत अचल लागत घटती है। 2

(ब) औसत परिवर्ती लागत शुरू में घटती है और उत्पादन के एक स्तर के बाद बढ़ने लगती है। 2

(अथवा)

$$\text{औसत सम्प्राप्ति} = \frac{\text{कुल सम्प्राप्ति}}{\text{कुल उत्पादन}}$$ 1

$$\text{कुल सम्प्राप्ति} = \text{कीमत} \times \text{उत्पादन}$$

$$\text{और औसत सम्प्राप्ति} = \frac{\text{कुल सम्प्राप्ति}}{\text{कुल उत्पादन}}$$

$$\therefore \text{औसत सम्प्राप्ति} = \frac{\text{कीमत} \times \text{उत्पादन}}{\text{उत्पादन}} = \text{कीमत}$$ 3

II $\text{कीमत}_x = 2$ रु., $\text{कीमत}_y = 2$ रु. सीमान्त प्रतिस्थापन दर=2

उपभोक्ता के सन्तुलन की स्थिति में:

$$\text{सी. प्र. दर} = \frac{\text{कीमत}_x}{\text{कीमत}_y}$$

दिए हुए मूल्यों के आधार पर;

$$\text{सी. प्र. दर} > \frac{\text{कीमत}_x}{\text{कीमत}_y} \quad \text{क्योंकि } 2 > \frac{2}{2}$$ 3

अतः उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं है। सी. प्र. दर के x और y की कीमतों के अनुपात से अधिक होने का अर्थ है कि उपभोक्ता x की एक और इकाई के लिए बाजार से अधिक कीमत देने को तैयार है। अतः उपभोक्ता x की अधिक इकाईयां खरीदना शुरू कर देगा। ऐसा करने पर ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता नियम के कारण सीमान्त प्रतिस्थापन दर घट जाएगी। ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक की सीमान्त प्रतिस्थापन दर x और y की कीमतों के अनुपात के बराबर न हो जाए। इनके बराबर होने पर उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में होगा। 3

अथवा

कीमत$_x$ = 5, कीमत$_y$ = 4 और सी॰उ॰$_x$ = 4 सी॰उ॰$_y$ = 5

उपभोक्ता के संतुलन की शर्त है: $\frac{\text{सी॰उ॰}_x}{\text{कीमत}_x} = \frac{\text{सी॰उ॰}_y}{\text{कीमत}_y}$

प्रश्न में दिए मूल्यों के अनुसार:

$$\frac{\text{सी॰उ॰}_x}{\text{कीमत}_x} < \frac{\text{सी॰उ॰}_y}{\text{कीमत}_y} \quad \text{क्योंकि } \frac{4}{5} < \frac{5}{4}$$

उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं है। क्योंकि x की प्रति रु॰ सी॰उ॰ y की प्रति रु॰ सी॰उ॰ से कम है इसलिए उपभोक्ता x की कम मात्रा खरीदेगा और y की अधिक मात्रा खरीदेगा। परिणामस्वरूप ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता नियम के कारण सी॰उ॰$_x$ बढ़ेगी और सी॰उ॰$_y$ घटेगी और अन्त में $\frac{\text{सी॰उ॰}_x}{\text{कीमत}_x}$ ~~नहीं~~ और $\frac{\text{सी॰उ॰}_y}{\text{कीमत}_y}$ बराबर हो जाएंगी

12

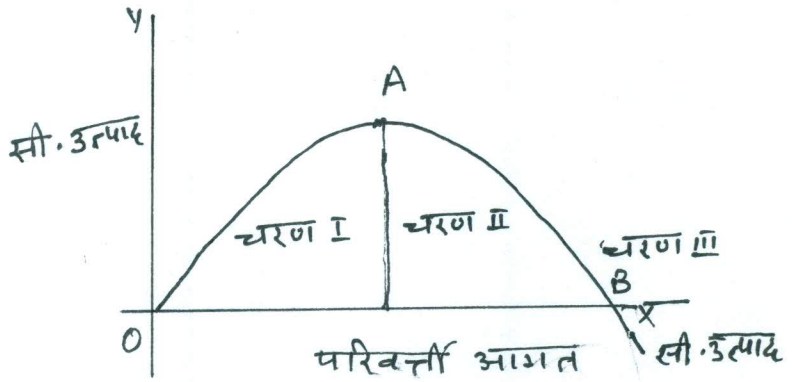

1½

चरण I : सीमान्त उत्पाद A बिन्दु तक बढ़ता है।

चरण II : A और B के बीच सीमान्त उत्पाद घटता है लेकिन धनात्मक है।

1½

चरण III : सीमान्त उत्पाद घटता है और ऋणात्मक होता है, B के बाद।

कारण :

चरण I : शुरू में स्थिर आगत की तुलना में परिवर्ती आगत की मात्रा बहुत कम होती है। जैसे ही उत्पादन बढ़ाया जाता है परिवर्ती आगत का विशिष्टीकरण और स्थिर आगत का ~~कुल~~ कुशल उपयोग होने लगता है। इससे उत्पादिता बढ़ती है और सीमान्त उत्पाद बढ़ता है।

चरण II : उत्पादन के कुछ स्तर के पश्चात स्थिर आगत पर दबाव बढ़ने लगता है जिससे उत्पादिता घटती है। सीमान्त उत्पाद घटने लगता है लेकिन धनात्मक रहता है।

चरण III : स्थिर आगत की तुलना में परिवर्ती आगत की मात्रा बहुत अधिक हो जाती है जिससे कुल उत्पाद घटने लगता है। सीमान्त उत्पाद घटता है और ऋणात्मक हो जाता है। 3

इकाई हीन परिक्षार्थियों के लिए

परिवर्ती आगत (इकाई)	कुल उ.	सीमान्त उत्पाद (इकाई)	
1	6	6	चरण I
2	20	14	
3	32	12	चरण II
4	40	8	
5	40	0	
6	37	-3	चरण III

B 1/2

चरण :
(1) कुल उत्पाद 2 इकाई तक बढ़ती दर से बढ़ता है। $\frac{1}{2} \times 3$
(2) कुल उत्पाद 5 इकाई तक घटती दर से बढ़ता है।
(3) 6 इकाई से कुल उत्पाद घटता है।

कारण : जैसा ऊपर दिए गए हैं। 3

13 उत्पादक के संतुलन की दो शर्तें हैं।

(i) सी. लागत = सी. सम्प्राप्ति

(ii) संतुलन के बाद सी. लागत > सी. सम्प्राप्ति

मान लीजिए सी. लागत > सी. सम्प्राप्ति। ऐसी स्थिति में फर्म के लिए उत्पादन घटाना या बढ़ाना लाभप्रद होगा। मान लीजिए 3
सी. लागत < सी. सम्प्राप्ति, ऐसी स्थिति में फर्म के लिए अधिक उत्पादन करना लाभप्रद होगा। फर्म उतना उत्पादन करेगी जिस पर सी. लागत = सी. सम्प्राप्ति।

सीमान्त लागत और सीमान्त सम्प्राप्ति का बराबर होना उत्पादक के संतुलन के लिए पर्याप्त शर्त नहीं है। मान लीजिए सी. लागत और सीमान्त सम्प्राप्ति बराबर हैं लेकिन एक और इकाई का उत्पादन करने पर सीमान्त लागत, सीमान्त सम्प्राप्ति से कम हो जाती है। ऐसी स्थिति में अधिक उत्पादन करना लाभप्रद है यानि उत्पादक संतुलन की स्थिति में नहीं है। यदि सीमान्त लागत और सीमान्त सम्प्राप्ति की समानता उत्पादन के ऐसे स्तर पर हो जिसके बाद सीमान्त लागत सीमान्त सम्प्राप्ति से अधिक हो तो उत्पादक केवल उतना ही उत्पादन करके संतुलन की स्थिति में होगा जिस पर सीमान्त लागत 3
और सीमान्त सम्प्राप्ति बराबर हैं।

(रेखाचित्र आवश्यक नहीं है)

14 संतुलन की स्थिति है और ~~माँग~~ पूर्ति घटती है।
कीमत अपरिवर्तित रहने पर माँग आधिक्य की स्थिति बन गई
इससे क्रेताओं में प्रतिस्पर्धा होगी और कीमत बढ़ेगी।
कीमत बढ़ने से माँग घटेगी और पूर्ति बढ़ेगी 6
कीमत संतुलन की स्थिति आने तक बढ़ती रहेगी।

खण्ड - ब

15. अन्तिम उत्पादों का मूल्य जिन्हें क्रेता एक निश्चित अवधि में निश्चित आय के स्तर पर खरीदने की योजना बनाते हैं समग्र माँग कहलाता है। 1

16 (द) अनन्त 1

17 (द) राजकोषीय घाटा — ब्याज भुगतान 1

18 (द) आय कमाने वालों से 1

19 (ब) में कमी आने की संभावना होती है। 1

20 $$\text{वास्तविक सकल देशीय उत्पाद} = \frac{\text{मौद्रिक सकल देशीय उत्पाद}}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100$$ 1½

$$400 = \frac{450}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100$$ 1

$$\text{कीमत सूचकांक} = \frac{450 \times 100}{400} = 112.5$$ ½

21 स्थिर विनिमय दर वह विनिमय दर है जो सरकार/केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्धारित की जाती है और विदेशी विनिमय की माँग और पूर्ति से प्रभावित नहीं होती। 1½

लचीली विनिमय दर वह विनिमय दर है, जो बाजार में विदेशी विनिमय की माँग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है और बाजार की शक्तियों से प्रभावित होती है। 1½

अथवा

नियंत्रित अस्थायी विनिमय दर लचीली विनिमय दर है जिसके उतार चढ़ाव को कम करने के लिए केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय के बाजार के जरिए हस्तक्षेप करता है। जब विदेशी विनिमय दर बहुत ऊँची होती है तो केन्द्रीय बैंक अपने कोष में से विदेशी मुद्रा बेचना शुरू कर देता है। जब यह बहुत नीची होती है तो केन्द्रीय बैंक बाजार में विदेशी मुद्रा खरीदना शुरू कर देता है। 3

22 विदेशों से उधार भुगतान संतुलन खाते के पूँजीगत खाते में दर्ज किया जाता है क्योंकि इससे देश की अन्तर्राष्ट्रीय देनदारी बढ़ती है। 1½

इसे जमा पक्ष की ओर दर्ज किया जाता है क्योंकि इससे देश में विदेशी विनिमय आता है। 1½

23 बैंकों के बैंक के रूप में केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों की आरक्षित नकदी के एक भाग को अपने पास रखता है। इससे वह इन बैंकों को आवश्यकता पड़ने पर उधार देता है। केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों को समाशोधन और अंतरण सुविधाएँ भी प्रदान करता है। 3

अथवा

देश में करेंसी जारी करने का अधिकार केवल केन्द्रीय बैंक को होता है। इससे वित्तीय प्रणाली में कुशलता बढ़ती है। इससे करेंसी संचालन में एकरूपता आती है और मुद्रा पूर्ति पर केन्द्रीय बैंक का नियंत्रण होजाता है। 3

24 मुद्रा पूर्ति के दो घटक होते हैं: करेंसी और वाणिज्य बैंकों में की गई जमाएँ। करेंसी केन्द्रीय बैंक जारी करता है और जबकि जमाओं का निर्माण वाणिज्य बैंक जनता को उधार देकर करता है। 2

वाणिज्य बैंक मुख्यतया निवेशकों को ऋण देते हैं। अर्थव्यवस्था में निवेश में वृद्धि से गुणक प्रक्रिया द्वारा राष्ट्रीय आय बढ़ती है। 2

25 राष्ट्रीय आय = स्वायत्त उपभोग + सी.उ.प्र. (रा. आय) + निवेश $1\frac{1}{2}$

$800 = 100 + (1-0.3)(800) + \text{निवेश}$ 2

$\text{निवेश} = 800 - 100 - 560 = 140$ $\frac{1}{2}$

(यदि केवल अन्तिम उत्तर लिखा है तो कोई अंक न दें)

26. (i) एक फर्म द्वारा बैंक को ब्याज का भुगतान फर्म द्वारा एक कारक भुगतान माना जाता है क्योंकि फर्म उत्पादन करने के लिए ऋण लेती है। इसलिए इसे राष्ट्रीय में शामिल करते हैं। 2

(ii) बैंक द्वारा एक व्यक्ति को ब्याज का भुगतान एक कारक भुगतान है क्योंकि बैंक बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने के लिए ऋण लेता है। इसलिए इसे राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है। 2

(iii) एक व्यक्ति द्वारा बैंक को ब्याज का भुगतान राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता क्योंकि व्यक्ति उपभोग के लिए ऋण लेता है उत्पादन के लिए नहीं। 2

(यदि कारण नहीं दिए हैं तो कोई अंक न दें)

17

अभावी माँग : पूर्ण रोजगार के स्तर पर जब समग्र माँग समग्र पूर्ति से कम होती है तो इस अन्तर को अभावी माँग कहते हैं। इससे कीमतें कम होती हैं। 2

बैंक दर वह दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों को दीर्घकाल के लिए ऋण देता है। केन्द्रीय बैंक ब्याज बैंक दर घटाकर अभावी माँग को कम कर सकता है। जब केन्द्रीय बैंक इस दर को घटाता है तो वाणिज्य बैंक भी जिस दर पर उधार देते हैं उसे घटा देते हैं। इससे ऋण लेना सस्ता हो जाता है और लोग ज्यादा ऋण लेते हैं। इससे समग्र माँग बढ़ती है और इससे प्रकार अभावी माँग कम करने में सहायता मिलती है। 4

अथवा

अति माँग : जब पूर्ण रोजगार के स्तर पर समग्र माँग समग्र पूर्ति से अधिक होती है तो इस अन्तर को अति माँग कहते हैं। इससे कीमतें बढ़ती हैं। 2

प्रति पुनर्खरीद दर वह ब्याज दर है जो केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों द्वारा की गई जमाओं पर देता है। केन्द्रीय बैंक प्रति पुनरखरीद दर बढ़ाकर अति माँग को कम कर सकता है। इसके बढ़ने से वाणिज्य बैंक केन्द्रीय बैंक में जमाएँ बढ़ाने के लिए उत्साहित होंगे। इससे इनकी ऋण देने की सामर्थ्य कम हो जाएगी। वाणिज्य बैंकों द्वारा कम ऋण दिए जाने से समग्र माँग घटेगी। 4

28 सरकार अपनी कर और व्यय नीति के द्वारा आय की असमानताएँ कम कर सकती है। ऊँची आय वालों से ऊँची दर पर कर ले सकती है। उन पर ऊँची दर पर आय कर लगा सकती है और उनके द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं पर अधिक कर लगा सकती है। इससे प्राप्त होने वाली राशी को गरीबों को सुविधाएँ प्रदान करने पर खर्च किया जा सकता है जैसे कि उनके बच्चों की निःशुल्क शिक्षा, निशुल्क चिकित्सा, सस्ते ~~आवास~~ मकान आदि। इससे उनकी प्रयोज्य आय बढ़ेगी। 6

29. राष्ट्रीय आय = (iv + ix) + i + viii + (vi + vii + xii) − ii $1\frac{1}{2}$

= 700 + 100 + 200 + 150 + 20 + 30 + 50 − 10 1

= 1240 करोड़ रु. $\frac{1}{2}$

निजी आय = रा. आय − x + iii − xi + v $1\frac{1}{2}$

= 1240 − 250 + 15 − 5 + 10 1

= 1010 करोड़ रु. $\frac{1}{2}$